8-11
(संयुक्त अंक)

ISSN: 2582-6530
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित विशेष अंक

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

अतिथि संपादक: राजीव रंजन प्रसाद

कंचनजंघा : विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

वर्ष: 04-06, अंक: 08-11, जुलाई-2023 से जून-2025 (संयुक्त अंक)

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

अतिथि संपादक

(अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित विशेष अंक)

राजीव रंजन प्रसाद

पत्राचार का पता

दुर्गा मंदिर रोड

न्यू गर्ल्स हॉस्टल बिल्डिंग, 06 माइल, गंगटोक

सिक्किम, पिन कोड : 737102

संपर्क : +91 - 6294913900 ईमेल : kanchanjanghapatrika@gmail.com

www.kanchanjangha.in

 ISSN: 2582-6530

संपादन समिति

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

परामर्श मंडल

सुवास दीपक
देवराज
येसे दरजे थोंगछी
सी. कामलोवा
राजेश जोशी
प्रदीप के शर्मा
भीम ठटाल

समीक्षा समिति

अजेय झा
भरत प्रसाद
संजय कुमार
जय कौशल
जेनी मलसोमदोङकिमी
गोरखनाथ तिवारी
अनुशब्द
चुकी भूटिया
अनुज कुमार
रूपेश कुमार सिंह

अतिथि संपादक (अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित अंक)

राजीव रंजन प्रसाद

संपादक मण्डल

मिलनरानी जमातिया
जोराम यालाम नाबाम
देवचंद्र सुब्बा
फिल्मेका मारबानियांग
शोभा लिम्बू

प्रबंधन एवं कला संपादन

कुँवर रवींद्र
पंकज कुमार सिंह

कवर पृष्ठ संयोजन

अमजद हुसैन

संपादन सहयोग

जमुना बीनी
प्रीति सिंह
राहुल निशांत
दीपक कुमार
अरविंद कुमार यादव
तुलसी छेत्री

कंचनजंघा

वर्ष: 05, अंक: 08-11, जुलाई-2023 से जून-2025 (संयुक्त अंक)

अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित विशेष अंक

इस अंक में...

संपादकीय

अरुणाचल प्रदेश अंक: सुखे-दु:खे समे कृत्वा — राजीव रंजन प्रसाद

अंत:करण का आयतन

हिंदी के अनुष्ठान में अर्घ्य बनी एक पत्रिका : अरुण नागरी — देवराज

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी के अभिभावक अध्यापक रमण शाण्डिल्य — राजीव रंजन प्रसाद

लेख

न्यीशी लोककथाओं का विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन — जोराम आनिया

गालो लोककथाओं में उदात्त, मजबूत और यथार्थ-स्त्री छवि — तुम्बम रीबा

अरुणाचल-केंद्रित लेखन और नंद किशोर पाण्डेय — हरीश कुमार शर्मा

तांगाम जनजाति का मौखिक साहित्य : वर्तमान परिप्रेक्ष्य — तुनुङ ताबीङ

गालो समाज में बच्चों के जन्म संबंधी मान्यताएँ — दोगे ङमदिर

सच्ची कविता ही अच्छी कविता होती है — अभिषेक कुमार यादव

आदी समाज में 'नबीङ' की भूमिका — ईङ परमे

मिश्मी लोकगीतों में अभिव्यक्त श्रम-सौंदर्य — मो. जोहरुल इस्लाम

अरुणाचली लोकवृत्त की 'तानी कथाएँ' — विक्रम कुमार

गालो और हिंदी लोक-सुभाषितों में नीतिपरक विचार और उपदेशात्मक चेतना — रबोम बेलो

तांग्सा जनजाति के मुहावरों में प्रयुक्त गालियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	रेमोन लोंग्कु
तानी समुदाय की कृषि संबंधी लोककथाओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-दर्शन	यागे काबाक
ईदु मिश्मी लोक साहित्य में जीवन-मूल्य	रीना कुमारी राय एवं आशा मिमी
बार्दो लोक-नाटक में दार्शनिकता के अभिव्यंजक तत्त्व	मिसुङ मदो
तागिन लोकगीत : ञ्मअ कबनम	चाचू दाई
ऊन्यिङ आरान : दक्षता एवं कौशल प्रदर्शन का आदी पर्व	नानू ताली
तवाङ : मनोरमता और लोकजीविता की पावन भूमि	लाम छोटन

पहाड़ी कोठार से

आबोतानी, मअजी यापम और किसिङ तामिङ की कहानी (तागिन लोक-कथाएँ)	यापी बायोर
जाईबोने (गालो लोक-कथा)	गुमजुम लोई
रिजुम हाअ्-रिमा हाअ् (तांग्सा लोक-कथा)	रेमोन लोंग्कु

घाटियों का स्वर

डेने सिटम डोनुना; पिलू जार्जु करिया लाये- कारिया लायी; आङा यी ई मादु नअ सी ई (तागिन लोकगीत)	यापी बायोर
इजी पेने पेबरे (न्यीशी लोकगीत)	यातो मूरी

भीतरी पाट से

न्यीशी लोकगाथा : संवेदना एवं स्वरूप	डूरी शांति
गालो लोक-कथाओं की प्रासंगिकता	गोरिक अतअ

भाषा-चेतना

मोनपा भाषा का हिंदी भाषा के संदर्भ में अध्ययन सोनाम वाङमू

गालो जनजाति की भाषा और लिपि व्यवस्था मोर्जुम लोयी

भाषा-शिक्षण

उत्तर-पूर्वी राज्यों में हिंदी भाषा-शिक्षण : समस्याएँ एवं समाधान (संदर्भ: अरुणाचल प्रदेश विशेष) अवधेश नारायण मिश्र एवं मीना कुमारी

बहुभाषाई एवं बहुसांस्कृतिक अरुणाचल प्रदेश में अनुवाद अध्ययन की आवश्यकता ज्योतिष पायेङ

कहानी

पुण्य ध्वजा येसे दोरजी थोंग्छी

अम्मा जोराम यालाम

ऑफिसर पत्नी तारो सिन्दिक

अनूदित कहानी

दोन्यी-पोलो अजन्ता

(अंग्रेजी से हिंदी) (अनुवादक: माधुर्ज्य कमल हाजरिका)

कविताएं

जमुना बीनी की पाँच कविताएँ

दोगे ङमदिर की दो कविताएँ

आईनाम इरिंग की तीन कविताएँ

गुम्पी डूसो लोम्बि की दो कविताएँ

दोरजी लोम्पु की तीन कविताएँ

सोनी रूमछु की चार कविताएँ

जोमयीर जीनी की दो कविताएँ

वांगो सोसिया की दो कविताएँ

अनूदित कविताएँ (अंग्रेजी से हिंदी)

गोकेन गेई की तीन कविताएँ

मियाज़ी हज़ाम की तीन कविताएँ

दोयिर एते की तीन कविताएँ

गंखु सुम्न्यां की दो कविताएँ

सुबी ताबा की दो कविताएँ

स्त्री-बोध

नेयाङः आन्ने और आदी स्त्री — पूर्णिमा ओसुनाम तायेङ

आदिवासी दर्पण

अनुष्ठानप्रिय मुकलोम जनजाति — चावाङ ताङहा

यात्रा-वृत्तांत

स्वर्ण पगोडा की भूमि-नामसाई — दयाराम वर्मा

गाँव-ज्ञान

'देसाली' गाँव का लोक-जीवन और लोक-रंग — रेनू मिसो

'दामिन' बस्ती और जैव-विविधता का लोक-पक्ष — तार्बा यादम

कृति-संधान

तानी दर्शन की विश्व दृष्टि : जिमी-जमा की आँखें सब देख रही हैं — देवराज

शोध-वातायन

अरुणाचल प्रदेश: लोक-साहित्य और हिंदी अनुसंधान — संतिमो निमासो

संस्मरण

अरुणाचल प्रवास के मेरे अविस्मरणीय दिन नंद किशोर पाण्डेय

लोकश्रुति नाट्य

हारमती निर्वासन मुनीन्द्र मिश्र

सिने-साक्षात्कार

परदे की खिड़की और दरवाजे खोले जाने का सही समय यही है
(फ़िल्मकार एवं लेखक ताई तुगुङ से याई न्योकिर की बातचीत)

पुस्तक समीक्षा

अनकही दास्तान: मामांग दाई की कृति 'काली पहाड़ी' नानाङ यीराङ

अरुणाचली स्त्री के श्रम, संघर्ष और साहस का जीवंत दस्तावेज 'मेरी आवाज़ सुनो' राजीव रंजन प्रसाद

संपादकीय

पहाड़ों की चुप्पी में शब्दों की गूँज...

कंचनजंघा पत्रिका का यह अंक पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों पर केंद्रित एक महत्त्वाकांक्षी और बहुप्रतीक्षित सांस्कृतिक परियोजना का प्रस्थान बिंदु है, जिसकी शुरुआत हम अरुणाचल प्रदेश से कर रहे हैं। इस यात्रा का उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत की बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुआयामी साहित्यिक परंपराओं से संवाद स्थापित करते हुए इसे संरक्षित करना है। इस अर्थ में, कंचनजंघा का यह अंक न केवल अरुणाचल प्रदेश के साहित्यिक और सांस्कृतिक वैभव का दस्तावेज़ है, बल्कि यह हिंदी साहित्य की विस्तारशीलता और आत्मीयता का भी प्रमाण है।

कंचनजंघा के इस अंक के माध्यम से हम एक बड़े संकल्प की ओर आगे बढ़ रहे हैं। यह अंक एक दीर्घकालिक साहित्यिक परियोजना का पहला पड़ाव है, जिसका उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत के आठों राज्यों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिदृश्य को स्वतंत्र रूप से विशेषांक के रूप में प्रकाशित करना है। अरुणाचल प्रदेश अंक इसका प्रथम सोपान है।

अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह अंक उन सभी रचनाकारों, शोधकर्ताओं, अनुवादकों और स्थानीय लेखकों की साझी मेहनत और संवेदना का परिणाम है, जिन्होंने इस परियोजना को केवल एक अकादमिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि एक आत्मीय एवं परस्पर संवाद में बदल दिया है। कंचनजंघा पत्रिका का यह विशेषांक अरुणाचल प्रदेश की लोक संस्कृति, भाषिक विविधता, साहित्यिक परंपरा, स्त्री-बोध एवं आदिवासी जीवन-दर्शन को समग्रता में समेटने का एक विनम्र प्रयास है। निश्चित रूप से आदिवासी लोकगीतों, कथाओं और कहावतों के माध्यम से अरुणाचल प्रदेश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जमीन को समझने की एक सतत जिज्ञासा इसमें परिलक्षित होती है।

यह अंक ऐसे अनुभवों की सह-यात्रा है, जिसमें अरुणाचल की घाटियों, उत्सवों, भाषाओं और लोक विश्वासों से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया गया है। स्थानीय लेखकों की सहभागिता इस विशेषांक की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय लेखकों और युवा रचनाकारों की सशक्त उपस्थिति ने इस अंक को और अधिक प्रामाणिक बना दिया है। निश्चित रूप से इस भागीदारी ने अंक में शामिल विषयवस्तु को विश्वसनीयता प्रदान की है। अंक में शामिल स्थानीय भाषाओं से हिंदी में अनूदित रचनाएं न केवल भाषायी सेतु का निर्माण करती हैं, बल्कि पाठक को भाषाओं के भीतर की अनुभूतियों से भी जोड़ती हैं। यह अंक पूर्वोत्तर भारत के साथ शेष भारत का समन्वय और स्थायी संवाद

की नींव स्थापित करने की एक कोशिश है। हमें उम्मीद है कि निकट भविष्य में यह संवाद महज रचनात्मक न होकर सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी सार्थक सिद्ध होगा।

मैं कंचनजंघा पत्रिका के इस विशेषांक के अतिथि संपादक डॉ. राजीव रंजन प्रसाद की प्रतिबद्धता और उनकी संवेदनशील दृष्टि की सराहना करता हूँ, जिन्होंने इस अंक के माध्यम से अरुणाचल प्रदेश के उन अनछुए पहलुओं से हमें परिचित कराया है, जिनसे अधिकांश पाठक समूह अनभिज्ञ है। हमें विश्वास है कि यह अंक न केवल अरुणाचल को समझने में सहायक होगा, बल्कि हिंदी पाठक को अपनी भाषा में एक नए भूगोल और संस्कृति से जोड़ने का सशक्त माध्यम भी बनेगा।

अतिथि संपादक के रूप में डॉ. राजीव रंजन की भूमिका केवल संपादकीय जिम्मेदारी तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने इस अंक को एक जीवंत सांस्कृतिक परियोजना के रूप में जिया। उनका संपादन किसी औपचारिक प्रक्रिया का निर्वहन नहीं, बल्कि एक सघन रचनात्मक और मानवीय प्रक्रिया का विस्तार रहा, जिसमें वे स्वयं एक माध्यम बनकर अरुणाचल की विविध भाषाओं, लोकधाराओं और साहित्यिक स्वरूपों को हिंदी जगत से जोड़ने के लिए सतत प्रतिबद्ध रहे। उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण इस अंक की विषयवस्तु की गहराई और विविधता में स्पष्ट परिलक्षित होता है। निश्चित रूप से राजीव रंजन ने संपादन के स्तर पर इस अंक को यथासंभव सहज और प्रमाणिक स्वरूप देने का प्रयास किया है। कंचनजंघा पत्रिका समूह की ओर से डॉ. राजीव रंजन प्रसाद के इस समर्पण और गहरे संपादकीय विवेक के साथ अंक के संपादन हेतु हार्दिक बधाई और साधुवाद।

यह विशेषांक हम उन सभी पाठकों को समर्पित करते हैं, जिनके भीतर अरुणाचल प्रदेश को जानने की जिज्ञासा और सह-यात्रा करने का भाव जीवित है। हमारी आकांक्षा है कि यह अंक पाठकों के भीतर पूर्वोत्तर भारत के प्रति एक नया भाव जगत रचे, एक ऐसी आत्मीयता उत्पन्न करे, जो केवल पठन तक सीमित न रहे, बल्कि समझ, संवाद और सहभागिता तक पहुँचे। कंचनजंघा परिवार की ओर से यह अंक सभी सुधी पाठकों को सादर समर्पित है- सप्रेम, सह-भाव और संकल्प के साथ।

(प्रदीप त्रिपाठी)

अतिथि संपादकीय

अरुणाचल प्रदेश अंक : सुख-दु:खे समे कृत्वा

"खुली छतों के दियें कब के बुझ गये होते,

कोई तो है जो हवाओं के पर कतरता है।" (वसीम वरेलवी)

यही हकीकत है। 'कंचनजंघा' पत्रिका के संपादक डॉ. प्रदीप त्रिपाठी और प्रो. देवराज जी मेरे संबल का मुख्य आधार बने। परिणामस्वरूप अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह विशेष अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत है। मनुष्य होने के नाते लिखना और पढ़ना सबसे बड़ा सत्कर्म है। ऐसा कर हम अपने इंसान बने रहने की पुष्टि करते हैं। स्वयं से यह जान पाते हैं कि हमारी सीमाएँ क्या हैं और पहुँच भी।

यह अंक हिंदुस्तानी भूगोल और देशज समाज-संस्कृति को पूर्वोत्तर की आँख से जानने-समझने का विनम्र प्रयास मात्र है। यद्यपि यह अंजुरी भर सच है, जहाँ से अरुणाचल प्रदेश की खिड़की खुलती है। अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह अंक कंचनजंघा पत्रिका का पूर्वोत्तर के साथ अपने अंत:संबंधों का निर्वाह और विस्तार दोनों है।

हाल के वर्षों में अरुणाचल प्रदेश का लेखकीय संसार हिंदी भाषा में बेहद समृद्ध हुआ है। इस प्रदेश की रचनात्मकता राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मौलिक पहचान के साथ उपस्थित हुई है, जिस ओर हिंदी समाज का ध्यान गया है। अरुणाचल प्रदेश का लेखक-वर्ग परस्पर परिचित और सम्मानित भी हुआ है। अब हिंदी के पाठक इस प्रदेश के रचनाकारों से परिचित हैं या उनका ध्यान जा रहा है, तो यहाँ के रचनाकार भी हिंदी भाषी लेखकों और पाठकों से सीधे मेल-मिलाप और साक्षात्कार कर पा रहे हैं। यह रचनात्मक घोल या मिश्रण बनाने में 'कंचनजंघा' पत्रिका का उद्यम काफी अधिक रहा है, यह मैं मानता हूँ। डॉ. प्रदीप त्रिपाठी जी के मन में अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित विशेष अंक निकालने का विचार आया और उन्होंने यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी, तो मुझे ठीक ही लगा। यह संपादन कार्य करने का सुख मैंने बटोरा है और यश भी पाया है। मेरा विश्वास आलोचनात्मक विवेक और खरी-खरी कहने-सुनने पर अधिक रहा है। अतएव, सुधि पाठक इस अंक को अपना मान स्वीकार करेंगे और पढ़ेंगे, सुझाव और मंतव्यों से अवगत कराएँगे। मुझे अपने इस संयोजन से इतनी अपेक्षा तो जरूर रखनी चाहिए।

मुझे अरुणाचल प्रदेश में रहते कई वर्ष हुए। मैं अपनी आँखों के भरोसे से कुछ बात कहना चाहता हूँ। अरुणाचल प्रदेश 28 जिलों से मिलकर बना एक हरित प्रदेश है। यह राज्य मुख्यत: वन क्षेत्र से आच्छदित भू-भाग है, जिसकी अंतरराष्ट्रीय सीमा चीन, भूटान और म्यांमार देशों से लगी हुई हैं। यह प्रदेश नदी, घाटी, पहाड़, वनस्पति, वन्यजीव, पशु-पक्षी, बारिश, धूप, बर्फ, आदिवासीजन से भरा-पूरा है। 'दोन्यी पोलो' का